प्रातः क्लास 1/7/1968 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है ?

ओमशान्ति। बाप क्या कर रहे हैं और बच्चे क्या कर रहे हैं। बाप भी जानते हैं और बच्चे भी जानते हैं कि (ह)मारी आत्मा जो तमोप्रधान बन गई है उनको सतोप्रधान बनाना है। जिसको गोल्डेन एजेड कहा जाता है। बाप आत्माओं को देखते हैं। आत्मा को ही ख्याल होता है हमारी आत्मा काली बन गई है। आत्मा के कारण शरीर भी काला बन गया है। ल॰ना॰ के मंदिर में जाते हैं, आगे तो जरा भी ज्ञान नहीं था। देखते थे यह तो सर्वगुण सम्पन्न है, गोरे हैं। हम तो काले भूत हैं; परन्तु ज्ञान नहीं था। अभी इन ल॰ना॰ के मंदिर में जावेंगे तो समझेंगे ....म तो पहले ऐसे सर्वगुण सम्पन्न..... थे। अभी पतित काले भूत हो गए हैं। उनके आगे कहते हैं हम काले विषस हैं। पापी हैं। आमने–सामने जाकर कहते हैं। शादी करते हैं तो भी पहले–2 ल॰ना॰ के मंदिर में ले जाते हैं। दोनों ही पहले निर्विकारी हैं। फिर विकारी बनते हैं। तो निर्विकारी देवताओं के आगे जाते हैं। तो अपन को विकारी पतित कहते हैं। हम दोनों का काला मुंह हो रहा है। आप गोरे, हम काले हैं। उनकी महिमा गाते हैं। शादी के पहले ऐसे नहीं कहेंगे। विकार में जाने से ही फिर मंदिर में जाकर उनकी महिमा गाते हैं। आजकल तो ल॰ना॰ के मंदिर में शादियाँ आदि होती हैं। कत्लाम होता है। काला मुंह करने लिए कंगण बांधते हैं। अभी तुम गोरा होने लिए कंगण बांधते हो; इसलिए गोरा बनाने वाले शिवबाबा को याद करते हो। जानते हो इस रथ के भृकुटि में बाप आया हुआ है। वह एवर प्युर है। उनकी यह आश रहती है कि बच्चे भी पवित्र गोरा बन जावें। मामेकं देख देखकर या मामेकं याद कर पवित्र हो जायें। आत्मा को याद करना है बाप को। बाप भी बच्चों को देख–देख हर्षित होते हैं। तुम बच्चे भी बाप को देख–देख समझते हो पवित्र बन जावेंगे तो फिर हम ऐसे ल॰ना॰ बनेंगे। यह एम आबजेक्ट बच्चों को बहुत खबरदारी से रखनी है। ऐसे नहीं कि बस बाबा के पास आये हैं फिर (व)हां जाने से अपने ही धंधे आद में पूरी हो जाये। इसलिए यहां सम्मुख बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। सभी को देखते हैं भृकुटि के बीच आत्मा रहती है। .... का यह तख्त है। जो आत्माएं हमारे बच्चे हैं वह इस तख्त पर बैठी है। खुद (आत्मा) तमोप्रधान है तो तख्त भी तमोप्रधान है। यह अच्छी रीत समझने की बातें हैं। ऐसा ल॰ना॰ बनना कोई मासी का घर नहीं। इनके सामने जाते हो तो कहते हो ना हम पतित हैं आप पावन हैं। हम काले हैं आप गोरे हो। आत्मा एक तो पहले से ही पतित है जन्म–जन्मांतर के। फिर उनको शादी कराकर और ही पतित बनाते हैं। फिर उनके आगे जाकर कहते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न..... शर्म आना चाहिए हम क्या करते हैं। इन्हों को क्या कहते हैं, अपन को क्या कहते हैं। हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। यह अंदर में आता तो है ना। शिव के आगे ऐसे नहीं कहते कि आप सर्वगुण सम्पन्न..... हम पापी विकारी हैं। बिल्कुल नहीं। शिव को तो भगवान कहते हैं ना। उस पर दूध–फूल आद चढ़ाते हैं। उनके आगे वह नहीं कहेंगे। तो यह बातें बाप खुद बैठ बतलाते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो हम इन जैसा हूबहू बन रहे हैं। आत्मा पवित्र बनकर ही जावेंगी। पवित्र बन जावेंगे फिर देवी–देवता कहलावेंगे। हम ऐसे स्वर्ग के मालिक बनते हैं; परन्तु माया ऐसी है जो भूला देती है। कई यहां सुनकर बाहर जाते हैं फिर भूल जाते हैं; इसलिए बाबा अच्छी रीत पक्का कराते हैं। अपन को देखना है जितना इन देवताओं में गुण हैं वह हमने धारण किये हैं श्रीमत पर। चित्र भी सामने हैं। विश्वास है हमको यह बनना है। बाप ही बनावेंगे। दूसरा कोई मनुष्य से देवता बना न सके। एक बाप ही है बनाने वाला। गायन भी है मनुष्य से देवता..... तुम्हारे में भी यह नम्बरवार ही जानते हैं। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में तुम क्या करते थे। कैसे गिरावट हुई। अभी ज्ञान मिलता है। यह बातें भक्त लोग नहीं जानते हैं। जब तक भगवान की श्रीमत न लेवें कुछ भी समझ न सकें। तुम बच्चे अभी श्रीमत ले रहे हो। यह अच्छी रीत बुद्धि में रखो हम शिवबाबा के मत पर माया को याद करते–2 हम यह बन रहे हैं। याद से ही हमारे पाप भस्म होंगे और कोई उपाय नहीं। और कोई उपाय नहीं। ल॰ना॰ तो गोरे हैं ना। मंदिरों में सांवरे बना रखा है। रघुनाथ मंदिर में राम को भी काला बनाया है; क्योंकि इसको पता नहीं।

पुजारी को भी पता नहीं। बात कितनी थोड़ी है। राम तो है त्रेता का। थोड़ा सा फर्क हो जाता है। 2 कला कम हुई ना। मकान 25 वर्ष हो गया तो थोड़ा पुराना ज़रूर लगेगा। तो बाप बैठ समझाते हैं शुरू में तुम भी थे। सिर्फ़ तुम नहीं प्रजा भी थी। सब सतोप्रधान खुबसूरत थे। प्रजा भी सतोप्रधान बन जाती है; परन्तु सजाएं खाकर बनती है। जितना जास्ती सज़ा पद भी कम हो जाता है। मेहनत करते हैं तो पाप कटते नहीं। पद कम हो जाता। बाप तो बहुत ही क्लीयर समझाते हैं। तुम यहाँ बैठे हो गोरा बनने लिए; परंतु माया बड़ा दुश्मन है जिसने काला बनाया है। देखते हैं अब गोरा बनाने वाला आया है तो माया सामना करती है। घड़ी–2 मुख मोड़ और तरफ़ ले जाती है। लिखते हैं बाबा हमको माया बहुत तंग करती है। बाप कहते हैं यह तो ड्रामा अनुसार इनको आधा कल्प का पार्ट बजाना है। यह युद्ध है। तुम गोरे से काले फिर काले से गोरे कैसे बनते हो यह खेल है। समझाते भी इनको हैं जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। इनके गाँव में ही आते हैं। ऐसे भी नहीं पार्ट में सभी 84 जन्म लेने वाले हैं। अभी तुम बच्चों को यह टाइम मोस्ट वैल्युएबुल है। पुरुषार्थ करना चाहिए पूरा हमको ऐसा बनना है। जरूर हमको पूरा पुरुषार्थ कर ऐसा बनकर ही दिखावेंगे। बाप ने कहा है सिर्फ़ मुझे याद करो और दैवी गुण भी धारण करनी है। किसको दुःख न देना है। बाप कहते हैं बच्चे अभी गफलत मत करो। बुद्धि योग एक बाप से लगाओ। तुमने प्रतिज्ञा की थी आप पर हम वारी जावेंगे। जन्म–जन्मांतर प्रतिज्ञा करते आये हो। बाबा आप आवेंगे तो हम आपके ही मत पर चलेंगे। पावन बन देवता बन जावेंगे। अगर युगल तुम्हारा साथ नहीं देता तो तुम अपना पुरुषार्थ करो। युगल साथी नहीं बनते तो जोड़ी नहीं बनेगी। जिसने जितना याद किया होगा, दैवी गुण धारण किया होगा उनकी ही जोड़ी बनेगी। जैसे देखते हो ब्रह्मा सरस्वती ने अच्छा पुरुषार्थ किया है तो जोड़ी बनती है ना। सरस्वती थी तो बाहर की। इनकी स्त्री तो थी नहीं पर इनकी पुरुषार्थ कम थी। बाबा ऐसे नहीं थे कि यह अन्यन्य हैं। बहुत सर्विस करते हैं। कभी नहीं। सर्विस करते हैं याद में रहते हैं यह भी गुण है ना। गोपों में भी बहुत अच्छे–2 बच्चे हैं। कोई खुद भी समझते हैं माया की कशिश होती है। यह जंजीर टूटती नहीं है। घड़ी–2 नाम रूप में फंसा देती है। बाप कहते हैं नाम रूप में नहीं फंसो मेरे में फंसो ना। जैसे तुम निराकार हो वैसे मैं भी निराकार हूँ। तुम निराकार आत्मा इस तख्त पर बैठे हो मैं भी इस तख्त पर टेम्पररी बैठा हूँ। तुमको आप समान बनाना है। टीचर आप समान बनावेंगे ना। सर्जन सर्जन बनावेंगे। बढ़ई बढ़ई ही बनावेंगे। यह तो बेहद का बाप है इनका नाम बाला है। बुलाते भी हैं हे पतित पावन आओ। आत्मा बुलाती है शरीर द्वारा बाबा आकर हमको पावन बनाओ। अभी तुम जानते हो हमको पावन कैसे बना रहे हैं। आत्मा तो है बहुत छोटी। बाबा भी है छोटा। जैसे हीरे होते हैं उनमें भी कई काले दाग होते हैं। अभी तुम समझते हो हमारी आत्मा में खाद पड़ी है। इसको निकाल फिर सच्चा सोना बनते हैं। आत्मा तो बहुत प्युर बनाना है। पहले हम ऐसे पवित्र थे। तुम्हारा एम आब्जेक्ट क्लीयर है और सतसंगों में ऐसे नहीं कहेंगे। बाप भी समझाते हैं। तुम्हारा लक्ष्य है यह बनने का। यह भी समझते हो ड्रामा अनुसार आधा कल्प रावण के संग में विकारी बने हैं फिर यह बनना है। तुम्हारे पास बैज भी है। इस पर समझाना बहुत ही सहज है। यह है त्रिमूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। यह तीन देवताएं हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना; परन्तु ब्रह्मा तो करते नहीं हैं। यह तो पतित था। फिर पावन बनते हैं। मनुष्यों को यह पता नहीं है यह पतित हैं फिर पावन बनते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो मंजिल पढ़ाई की ऊँच है। बाप आते हैं पढ़ाने लिए। ज्ञान है ही बाबा में। वह कोई से पढ़ा हुआ नहीं है। ड्रामा के प्लैन अनुसार इन में ज्ञान है। ऐसे नहीं कहेंगे कि इनमें ज्ञान कहां से आया। नहीं। वह है ही नालेज फुल। वही पावन बनाते हैं। पत्थर बुद्धि मनुष्य कुछ भी समझते नहीं हैं। अगर समझते तो गंगा आद में जाते नहीं। गोता खाते ही रहते हैं। समुद्र में भी स्नान करते हैं फिर पूजा करते हैं। सागर देवता समझते हैं। अच्छा भगवान तो नहीं है ना। बहुत में वह तो पानी है। नदियां जो बहती हैं वह तो हैं ही। कब विनाश को नहीं पातीं। बाकी हां पहले यह

ऑर्डर में रहती थीं। बोड आद का नाम नहीं था। कब मनुष्य डूबते नहीं थे। वहां तो मनुष्य ही बहुत थोड़े होते हैं। फिर वृद्धि को पाते रहते हैं। कलियुग अंत तक कितने मनुष्य हो जाते हैं। वहां तो आयु बहुत बड़ी रहती है। कितने थोड़े मनुष्य होंगे। फिर 2500 वर्ष में कितनी वृद्धियां हो जाती हैं। झाड़ का कितना प्रस्ताव हो जाता है। पहले–2 पार्ट में सिर्फ़ हमारा राज्य था। तो ऐसे कहेंगे तुम्हारे में भी कोई है। जिनको याद रहता है हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। हम रूहानी वारियर्स योगबल वाले हैं। यह भी भूल जाते हैं। हम माया से लड़ाई करने वाले हैं। कुमारियां पवित्र होती हैं फिर शादी के बाद अपवित्र बन जाती हैं। शादी करते हैं तो फिर इनको मंदिर में ले जाते हैं। जैसे वह चर्च में ले जाते हैं पोप आता है तो शादियां कितनी ढेर होती हैं। बड़े ते कड़ा कसाई पोप हुआ। जो इतने ढेर रिढ़ बकरियों को कत्ल कराते हैं। यह धंधा कौन करते हैं ? पोप। अभी इनको क्या कहेंगे बड़े ते बड़ा कसाई है। हमारे ज्ञान के अनुसार चर्च टावर आफ सायलेन्स तो है नहीं। बड़ी चर्च रोम में है। बड़े बड़ा कसाई रहता है। जैसे बच्चों को समझाया है साधु संन्यासी जो अपन को भगवान कहलाते हैं वह बड़े कसाई हैं। अभी यह बातें भी तुम समझते हो और कोई समझ न सके। यह राजाई स्थापन हो रही है। हम कर रहे हैं। जितना बाप को याद करेंगे एम आब्जेक्ट यह है। ऐसा बनने लिए इन द्वारा बाबा हमको यह देवता बनाते हैं। तो फिर क्या करना चाहिए बाप को याद करना चाहिए। यह तो हुआ दलाल। गायन है भी जब सद्गुरु मिला दलाल..... के रूप में। बाबा भी शरीर लेते हैं तो यह बीच में दलाल हुआ। फिर तुम्हारा योग लगाते हैं शिवबाबा से। बाकी सगाई आद का नाम मत लो। शिवबाबा इस द्वारा हमारी आत्मा को पवित्र बनाते हैं। कहते हैं हे बच्चों मुझ अपने बाप को याद करो। तुम तो ऐसे नहीं कहेंगे मुझ बाप को याद करो। तुम बाप का ज्ञान सुनावेंगे। बाबा ऐसे कहते हैं। यह भी बाप अच्छी रीत समझाते हैं। आगे चल शायद बहुतों को सा० हो। फिर दिन(दिल) अंदर खाती रहेगी। बाप कहते हैं अभी टाइम बहुत थोड़ा रहा है। इन आंखों से तुम विनाश देखेंगे। जब रिहर्सल होगी तो तुम देखेंगे ऐसा विनाश होगा। इन आंखों से भी बहुत देखेंगे। बहुतों को स्वर्ग का भी सा० होता रहेगा। यह भी जल्दी–2 होते रहेंगे। ज्ञान मार्ग में सब है रीयल। भक्ति में है इमीटेशन। सिर्फ़ सा० किया बना थोड़े ही। तुम तो बनते हो। जो सा० किया है वह फिर इन आंखों से देखेंगे। विनाश देखना कोई मासी का घर नहीं। बात मत पूछो। एक दो के सामने खून करते रहेंगे। आगे तो सभी इकट्ठे थे। अभी तो गवर्मेन्ट अलग–2 करती जाती है। दो से ताली बजेंगी ना। दो भाईयों को अलग कर देते हैं। आपस में बैठ लड़ो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। इस राज को समझते ही नहीं। दो को अलग अलग कर देते तो लड़ते रहेंगे। उन्हों का बारूद खलास होता रहेगा। कमाई हुई ना। अभी दो जंगली जहाज खरीद किये हैं। चार करोड़ डॉलर है एक की। बहुत तीखे हो जावेंगे। बाम्स आद भी दस में रखेंगे। कोई की मशीन ख़राब हो जाये तो खलास। परन्तु पिछाड़ी में इनसे काम नहीं होगा। घर बैठे ही बम फेंकेंगे और खलास। उसमें न मनुष्यों की न हथयारों आद की दरकार है। तो बाप समझाते हैं बच्चे स्थापना तो ज़रूर होनी ही है। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। समझाते तो बहुत ही हैं। जहां भी देखो ल०ना० का वा शिव का मंदिर है। बाजु में कोस घर बनाया है। तो समझाओ भगवानुवाचः काम महाशत्रु है। तुम यह क्या करते हो। काला मुंह करते–2 काला बन गये हो। तुमने यह मंदिर बनाया है। वहां फिर शादियाँ ? यह तो बहुत ही पाप का काम करते हो। अभी भगवान आया है गोरा देवता बनाने लिए। भगवान कहते हैं यह काम कटारी न चलाओ। काम को जीत जगत जीत बनना है। तुम फिर यह कितना पाप का काम करते हो। आखरीन में कोई को तीर लगेगा ज़रूर; परन्तु थोड़ा देरी से। फिर तुम्हारा आवाज होगा। संन्यासी आद भी समझेंगे यह क्या कहते हैं। जो अपन को ईश्वर कहलाते हैं वह हैं ऊँच ते ऊँच असुर। पोप ऊँच ते ऊँच असुर। संन्यासी भी ऊँच ते ऊँच असुर जो अपन को भगवान कहलाते हैं। वह पोप तो फिर भी अपन को भगवान नहीं कहलाते। सिर्फ़ कत्लाम करते हैं। यह तो अपन को भगवान कहते

हैं। भारत है सबसे तमोप्रधान। भीख मांगते रहते हैं। कर्ज लेकर फिर औरों को देते हैं। कहते हैं ना "आप पीने घोड़ा गिने"। कितना सिर पर कर्ज है। कितना नुकसान होता है। यह भी सब ड्रामा में नूँध है। बम्स(बॉम्ब्स) बनाते हैं रखने लिए थोड़े ही हैं। एक दो में लड़ते ही रहेंगे। वह एक दो को अलग ही करते रहते। यहां बाप तुमको मिलाते रहते हैं। अपन को भाई–2 समझो। बाप समान बनना है। बाप ज्ञान का सागर, शांति का सागर है तो ऐसा बच्चों को भी बनना है। देवताएं बनेंगे तो देवताओं की महिमा ही फिर जावेंगी। इस समय तुम्हारी महिमा बाप जैसी है। फिर अपने राजधानी में जावेंगे तो महिमा अलग हो जावेगी। बाप बैठ सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न..... पवित्र बनाते हैं। तो बच्चों को भी दैवी गुण धारण करनी है। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। बेहद की बादशाही में 21 जन्म तुम सुख भोगते हो। अनेक बार तुमने देवी–देवता धर्म वाले बने हो। अभी फिर देवता बन रहे हो। पुरुषार्थ कराते रहते हैं। बाप को याद करो। बाप जानते हैं अकाल मूर्त आत्मा का तख्त (शरीर) है। उन्होंने अकाले नाम रख दिया है। अर्थ नहीं समझते। अकाल अर्थात् जिसको काल नहीं खाता। उनका यह शरीर है। अभी बच्चों को खुब पुरुषार्थ करना चाहिए। बाप कहते हैं समय थोड़ा है। शरीर पर भरोसा नहीं है। चलते–2 मौत हो जाता; इसलिए जो करना है सो कर लेना चाहिए। वानप्रस्थ लेते हैं तो जो कुछ बांटना करना है वह पहले से ही कर देना चाहिए। नहीं तो बात मत पूछो। मिलकीयत के लिए आपस में लड़ पड़ते हैं। बाबा पूछते हैं तुमको कितने बच्चे हैं कहते हैं चार, एक मिलाकर 5 कह देते हैं। अच्छा पांचवे का भी हिस्सा लगे। यह बच्चा तो तुम्हारा बहुत–2 कल्याण करने वाला है। और बच्चे इतना कल्याण नहीं करेंगे जितना यह करेगा। वह तुम कहते आये हो तुम पर वारी जाऊंगी। फिर वह वचन कहां? क्या शरीर छोड़कर विल करेंगे। कुछ भी नहीं होगा। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। कुछ समझो। माया में मत फंसो। वानप्रस्थ अवस्था भी है। तो सभी बच्चों को हिसाब दे दो। यह बच्चा फिर ऐसा है, समझो कहते हैं हमको पैसे चाहिए, अच्छा ले जाओ। अन्त तक ट्रस्टी है। तुम बाप के श्रीमत पर चलो। इनकी श्रीमत से खर्चा करो। बाबा कोई मना नहीं करते। भल बच्चे आद की शादी करो शक्ति अनुसार। सभी पूछ करके करो। कोई भी पाप का काम न करो। पापात्माएं पाप का ही धंधा आद करते हैं। गन्धर्वी विवाह करेंगे तो भी बद्धि लटकी रहेगी। यह भी क्यों करें जो याद आये। पिछाड़ी में तो सिवाय बाप के कुछ भी याद न आये तब ही स्कालरशिप मिलती है। विश्व के मालिक बनते हो। जो और कोई दे न सके। सारा आसमान धरती आद का तुम मालिक बन जाते हो। मैं तुमको सारे विश्व का मालिक बना देता हूं। तो ऐसे बाप को कितना खुशी से याद करना चाहिए। क्यों न म्युजियम आद बनावें। जो बहुतों को कल्याण हो। बहुत ही प्रजा बन जाये। तुम्हारा ही पुण्य होगा। बहुत ही ऊँच चढ़ जावेंगे। थर्ड, फोर्थ राजा आद बनेंगे तो तुम्हारी प्रजा भी बनेगी ना। तुम्हारी भी तुम्हारे बड़ों की भी। कितनी बातें समझाते हैं। फिर कहते हैं एक सेकण्ड की बात है। एक सेकण्ड में विश्व का मालिक कैसे बन सकते हो वह आकर समझो। टेम्पटेशन कितनी बड़ी है। बोर्ड लगा दो। नुकसान की तो बात ही नहीं। तुम बाप का ही परिचय देते हो। बाप को याद करो तो पाप कट जाये। तुम देवता बन जावेंगे। कितना अच्छी रीत समझाते हैं। म्युजियम में भी समझाओ यह कौन है। यह पावन देवता। तुम पतित, शर्म नहीं आता। 84 जन्मों बाद तुम्हारा यह हाल हुआ है। तुम देवताओं की पुजारी हो जरूर इनके ही कुल के होंगे। बात करने की भी बड़ी रमणिक मूर्त हो। यह ल०ना० भी मनुष्य से देवता बने हैं ना। तुम भी मनुष्य हो फिर यह देवता तुम असुर क्यों ? कहते हैं हम कामी कुत्ते हैं। यह (ल०ना०) देखो कौन हैं। तुम देवता कुल के थे। तब तो अनको(उनको) पूजते हो ना। अभी फिर इन जैसा बनते हो। तो बाप को याद करो तो तुम्हारी कट निकल जावेगी और कोई उपाय नहीं। बाप कहते हैं मरे(मेरे) जो पुजारी हैं उन्हों के पास जाओ। वह भी मिलेंगे मंदिरों में। गंगा पर जाकर समझाओ। आत्मा को साफ होना है। वह तो बाप को याद करने से ही बनेगी। बाप श्रीमत देते हैं तुम गंगा स्नान करो। बाकी यह जंगली पना छोड़ो। ऐसे योग युक्त होकर समझावेंगे तो खड़ा हो जावेंगे। ओम